

यूहन्ना का पहला 'आम खत

?????????? ?? ?????

यह खत मुसन्निफ़ की पहचान नहीं करती मगर एक मज़बूत बा उसूल और कलीसिया की सब से पहली गवाही मन्सूब करते हैं कि इस का मुसन्निफ़ यूहन्ना रसूल और शागिर्द है। (लूका 6:13, 14) हालांकि इन तीनों खतों में कहीं भी यूहन्ना के नाम का ज़िक्र नहीं है इस के बावजूद भी तीन मज़बूर करने वाले हुकूक सामने आते हैं जो उसके मुसन्निफ़ होने की तरफ़ इशारा करते हैं। पहला है इब्तिदाई दूसरी सदी के लिखने वाले जो यूहन्ना के मुसन्निफ़ होने का हवाला पेश करते हैं दूसरा है खुतूत के फ़रहंग बिलकुल वैसी है जैसी कि यूहन्ना की इन्जील। तीसरा यह कि मुसन्निफ़ ने खुद लिखा कि उसने येसू मसही को देख है और उस के जिस्म को छुआ है जो कि यक़ीन दिलाता है कि वह यूहन्ना रसूल ही है (1 यूहन्ना 1:1 — 4; 4:14)।

????? ?????? ?? ?????????? ?? ????

इस के लिखे जाने की तारीख़ तक़रीबन 85 - 95 के बीच है। इस खत को यूहन्ना ने इफ़सस में रहते हुए लिखा जहां वह अपनी बुढ़ापे की ज़िन्दगी गुज़ार रहा था।

????????? ?????????????? ?????? ??????

1 यूहन्ना के सामईन की बाबत ख़ास तौर से खत में कोई इशारा नहीं किया गया है। किसी तरह इस खत के मज़मून इशारा करते हैं कि यूहन्ना ने यह खत मसीही ईमानदारों को लिखा है (1 यूहन्ना 1:3 — 4; 2:12 — 14) यह मुमकिन है कि उसने कई एक इलाकों में रहने वाले खुदा रसीदा लोगों को लिखा हो। आम तौर से तमाम मसीहियों के लिए जो हर जगह पाये जाते हैं, 2:1, “मेरे छोटे बच्चों।”

????????

यूहन्ना ने यह खत रिफ़ाक़त को बढ़ाने और उस की तक़वियत के लिए लिखा ताकि हम खुशी से भर जाएं, और हम गुनाहों से बाज़ रहें, हमें नजात का यक़ीन दिलाने के लिए और ईमान्दार को मसीह के साथ एक शख़्सी रिफ़ाक़त में लाने के लिए। यूहन्ना खास तौर से झूटे उस्तादों का मुद्दा उठाता है जो कलीसिया से अलग हो चुके थे और लोगों को इन्जील की सच्चाई से गुमराह करने की कोशिश कर रहे थे।

????????

खुदा के साथ रिफ़ाक़त।

बैरूनी खाका

1. तजस्सुसम की हकीक़त — 1:1-4
2. रिफ़ाक़त — 1:5-2:17
3. फ़रेब की पहचान — 2:18-27
4. पाकीज़ा ज़िन्दगी के लिए ज़माना — ए — हाल में तहरीक़ किया जाना — 2:28-3:10
5. मुहब्बत यक़ीन के लिए बुनियाद बतौर — 3:11-24
6. बुरी रूह की बसीरत — 4:1-6
7. मख़्सूसियत के लिए ज़रूरी बातें — 4:7-5:21

????????

1 उस ज़िन्दगी के कलाम के बारे में जो शुरू से था, और जिसे हम ने सुना और अपनी आँखों से देखा बल्कि, ग़ौर से देखा और अपने हाथों से छुआ।

2 [ये ज़िन्दगी ज़ाहिर हुई और हम ने देखा और उसकी गवाही देते हैं, और इस हमेशा की ज़िन्दगी की तुम्हें ख़बर देते हैं जो बाप के साथ थी और हम पर ज़ाहिर हुई है]।

3 जो कुछ हम ने देखा और सुना है तुम्हें भी उसकी खबर देते हैं, ताकि तुम भी हमारे शरीक हो, और हमारा मेल मिलाप बाप के साथ और उसके बेटे ईसा मसीह के साथ है।

4 और ये बातें हम इसलिए लिखते हैं कि हमारी खुशी पूरी हो जाए।

5 उससे सुन कर जो पैग़ाम हम तुम्हें देते हैं, वो ये है कि खुदा नूर है और उसमें ज़रा भी तारीकी नहीं।

6 अगर हम कहें कि हमारा उसके साथ मेल मिलाप है और फिर तारीकी में चलें, तो हम झूठे हैं और हक़ पर 'अमल नहीं करते।

7 लेकिन जब हम नूर में चलें जिस तरह कि वो नूर में हैं, तो हमारा आपस में मेल मिलाप है, और उसके बेटे ईसा का खून हमें तमाम गुनाह से पाक करता है।

8 अगर हम कहें कि हम बेगुनाह हैं तो अपने आपको धोखा देते हैं, और हम में सच्चाई नहीं।

9 अगर अपने गुनाहों का इकरार करें, तो वो हमारे गुनाहों को मु'आफ़ करने और हमें सारी नारास्ती से पाक करने में सच्चा और 'आदिल है।

10 अगर कहें कि हम ने गुनाह नहीं किया, तो उसे झूठा ठहराते हैं और उसका कलाम हम में नहीं है।

2

1 ए मेरे बच्चों! ये बातें मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ तुम गुनाह न करो; और अगर कोई गुनाह करे, तो बाप के पास हमारा एक मददगार मौजूद है, या'नी ईसा मसीह रास्तबाज़;

2 और वही हमारे गुनाहों का कफ़़ारा है, और न सिर्फ़ हमारे ही गुनाहों का बल्कि तमाम दुनिया के गुनाहों का भी।

3 अगर हम उसके हुक्मों पर 'अमल करेंगे, तो इससे हमें माँ'लूम होगा कि हम उसे जान गए हैं।

4 जो कोई ये कहता है, मैं उसे जान गया हूँ “और उसके हुकमों पर” अमल नहीं करता, वो झूठा है और उसमें सच्चाई नहीं।

5 हाँ, जो कोई उसके कलाम पर 'अमल करे, उसमें यकीनन खुदा की मुहब्बत कामिल हो गई है। हमें इसी से मा'लूम होता है कि हम उसमें हैं:

6 जो कोई ये कहता है कि मैं उसमें क्राईम हूँ, तो चाहिए कि ये भी उसी तरह चले जिस तरह वो चलता था।

?? ???? ???? ?

7 ऐ 'अज़ीज़ो! मैं तुम्हें कोई नया हुकम नहीं लिखता, बल्कि वही पुराना हुकम जो शुरू से तुम्हें मिला है; ये पुराना हुकम वही कलाम है जो तुम ने सुना है।

8 फिर तुम्हें एक नया हुकम लिखता हूँ, ये बात उस पर और तुम पर सच्ची आती है; क्योंकि तारीकी मिटती जाती है और हक्रीक्री नूर चमकना शुरू हो गया है।

9 जो कोई ये कहता है कि मैं नूर में हूँ और अपने भाई से 'दुश्मनी रखता है, वो अभी तक अंधेरे ही मैं है।

10 जो कोई अपने भाई से मुहब्बत रखता है वो नूर में रहता है और ठोकर नहीं खाता।

11 लेकिन जो अपने भाई से 'दुश्मनी रखता है वो अंधेरे में है और अंधेरे ही में चलता है, और ये नहीं जानता कि कहाँ जाता है क्योंकि अंधेरे ने उसकी आँखें अन्धी कर दी हैं।

12 ऐ बच्चो! मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ कि उसके नाम से तुम्हारे गुनाह मु'आफ़ हुए।

13 ऐ बुजुर्गो! मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ कि जो इब्तिदा से है उसे तुम जान गए हो। ऐ जवानो! मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ कि तुम उस शैतान पर ग़ालिब आ गए हो। ऐ लड़कों! मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है कि तुम बाप को जान गए हो

14 ऐ बुजुर्गों! मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है कि जो शुरू से है उसको तुम जान गए हो। ऐ जवानों! मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है कि तुम मज़बूत हो, उसे खुदा का कलाम तुम में क़ाईम रहता है, और तुम उस शैतान पर ग़ालिब आ गए हो।

15 न दुनिया से मुहब्बत रखो, न उन चीज़ों से जो दुनियाँ में हैं। जो कोई दुनिया से मुहब्बत रखता है, उसमें बाप की मुहब्बत नहीं।

16 क्य़ाँकि जो कुछ दुनिया में है, या'नी जिस्म की ख़्वाहिश और आँखों की ख़्वाहिश और ज़िन्दगी की शेखी, वो बाप की तरफ़ से नहीं बल्कि दुनिया की तरफ़ से है।

17 दुनियाँ और उसकी ख़्वाहिश दोनों मिटती जाती है, लेकिन जो खुदा की मज़ी पर चलता है वो हमेशा तक क़ाईम रहेगा।

18 ऐ लड़कों! ये आख़िरी वक़्त है; जैसा तुम ने सुना है कि मुख़ालिफ़ — ए — मसीह आनेवाला है, उसके मुवाफ़िक़ अब भी बहुत से मुख़ालिफ़ — ए — मसीह पैदा हो गए हैं। इससे हम जानते हैं ये आख़िरी वक़्त है

19 वो निकले तो हम ही में से, मगर हम में से थे नहीं। इसलिए कि अगर हम में से होते तो हमारे साथ रहते, लेकिन निकल इस लिए गए कि ये ज़ाहिर हो कि वो सब हम में से नहीं हैं।

20 और तुम को तो उस कुदूस की तरफ़ से मसह किया गया है, और तुम सब कुछ जानते हो।

21 मैंने तुम्हें इसलिए नहीं लिखा कि तुम सच्चाई को नहीं जानते, बल्कि इसलिए कि तुम उसे जानते हो, और इसलिए कि कोई झूठ सच्चाई की तरफ़ से नहीं है।

22 कौन झूठा है? सिवा उसके जो ईसा के मसीह होने का इन्कार करता है। मुख़ालिफ़ — ए — मसीह वही है जो बाप और बेटे का इन्कार करता है।

23 जो कोई बेटे का इन्कार करता है उसके पास बाप भी नहीं: जो बेटे का इकरार करता है उसके पास बाप भी है।

24 जो तुम ने शुरू से सुना है अगर वो तुम में क्राईम रहे, तो तुम भी बेटे और बाप में क्राईम रहोगे।

25 और जिसका उसने हम से वादा किया, वो हमेशा की ज़िन्दगी है।

26 मैंने ये बातें तुम्हें उनके बारे में लिखी हैं, जो तुम्हें धोखा देते हैं;

27 और तुम्हारा वो मसह जो उसकी तरफ़ से किया गया, तुम में क्राईम रहता है; और तुम इसके मोहताज नहीं कि कोई तुम्हें सिखाए, बल्कि जिस तरह वो मसह जो उसकी तरफ़ से किया गया, तुम्हें सब बातें सिखाता है और सच्चा है और झूठा नहीं; और जिस तरह उसने तुम्हें सिखाया उसी तरह तुम उसमें क्राईम रहते हो।

28 गरज़ ऐ बच्चो! उसमें क्राईम रहो, ताकि जब वो ज़ाहिर हो तो हमें दिलेरी हो और हम उसके आने पर उसके सामने शर्मिन्दा न हों।

29 अगर तुम जानते हो कि वो रास्तबाज़ है, तो ये भी जानते हो कि जो कोई रास्तबाज़ी के काम करता है वो उससे पैदा हुआ है।

3

1 देखो, बाप ने हम से कैसी मुहब्बत की है कि हम खुदा के फ़र्ज़न्द कहलाए, और हम है भी। दुनिया हमें इसलिए नहीं जानती कि उसने उसे भी नहीं जाना।

2 'अज़ीज़ो! हम इस वक़्त खुदा के फ़र्ज़न्द हैं, और अभी तक ये ज़ाहिर नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं कि जब वो ज़ाहिर होगा तो हम भी उसकी तरह होंगे, क्यूँकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वो है।

3 और जो कोई उससे ये उम्मीद रखता है, अपने आपको वैसा ही पाक करता है जैसा वो पाक है।

4 जो कोई गुनाह करता है, वो शरी'अत की मुखालिफ़त करता है; और गुनाह शरी'अत' की मुखालिफ़त ही है।

5 और तुम जानते हो कि वो इसलिए ज़ाहिर हुआ था कि गुनाहों को उठा ले जाए, और उसकी ज़ात में गुनाह नहीं।

6 जो कोई उसमें क्राईम रहता है वो गुनाह नहीं करता; जो कोई गुनाह करता है, न उसने उसे देखा है और न जाना है।

7 ऐ बच्चो! किसी के धोखे में न आना। जो रास्तबाज़ी के काम करता है, वही उसकी तरह रास्तबाज़ है।

8 जो शरूस गुनाह करता है वो शैतान से है, क्योंकि शैतान शुरू ही से गुनाह करता रहा है। खुदा का बेटा इसलिए ज़ाहिर हुआ था कि शैतान के कामों को मिटाए।

9 जो कोई खुदा से पैदा हुआ है वो गुनाह नहीं करता, क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है; बल्कि वो गुनाह कर ही नहीं सकता क्योंकि खुदा से पैदा हुआ है।

10 इसी से खुदा के फ़र्ज़न्द और शैतान के फ़र्ज़न्द ज़ाहिर होते हैं। जो कोई रास्तबाज़ी के काम नहीं करता वो खुदा से नहीं, और वो भी नहीं जो अपने भाई से मुहब्बत नहीं रखता।

?? ?????? ?? ?????????? ???

11 क्योंकि जो पैगाम तुम ने शुरू से सुना वो ये है कि हम एक दूसरे से मुहब्बत रखें।

12 और क्राइन की तरह न बनें जो उस शरीर से था, और जिसने अपने भाई को क़त्ल किया; और उसने किस वास्ते उसे क़त्ल किया? इस वास्ते कि उसके काम बुरे थे, और उसके भाई के काम रास्ती के थे।

13 ऐ भाइयों! अगर दुनिया तुम से 'दुश्मनी रखती है तो ताअ'ज्जुब न करो।

14 हम तो जानते हैं कि मौत से निकलकर ज़िन्दगी में दाखिल हो गए, क्योंकि हम भाइयों से मुहब्बत रखते हैं। जो मुहब्बत नहीं रखता वो मौत की हालत में रहता है।

15 जो कोई अपने भाई से 'दुश्मनी रखता है, वो खूनी है और तुम जानते हो कि किसी खूनी में हमेशा की ज़िन्दगी मौजूद नहीं रहती।

16 हम ने मुहब्बत को इसी से जाना है कि उसने हमारे वास्ते अपनी जान दे दी, और हम पर भी भाइयों के वास्ते जान देना फ़र्ज़ है।

17 जिस किसी के पास दुनिया का माल हो और वो अपने भाई को मोहताज देखकर रहम करने में देर करे, तो उसमें खुदा की मुहब्बत क्यूँकर क़ाईम रह सकती है?

18 ऐ बच्चो! हम कलाम और ज़बान ही से नहीं, बल्कि काम और सच्चाई के ज़रिए से भी मुहब्बत करें।

19 इससे हम जानेगे कि हक़ के हैं, और जिस बात में हमारा दिल हमें इल्ज़ाम देगा, उसके बारे में हम उसके हुज़ूर अपनी दिलजम'ई करेंगे;

20 क्यूँकि खुदा हमारे दिल से बड़ा है और सब कुछ जानता है।

21 ऐ 'अज़ीज़ो! जब हमारा दिल हमें इल्ज़ाम नहीं देता, तो हमें खुदा के सामने दिलेरी हो जाती है;

22 और जो कुछ हम माँगते हैं वो हमें उसकी तरफ़ से मिलता है, क्यूँकि हम उसके हुक़्मों पर अमल करते हैं और जो कुछ वो पसन्द करता है उसे बजा लाते हैं।

23 और उसका हुक़्म ये है कि हम उसके बेटे ईसा मसीह के नाम पर ईमान लाएँ, जैसा उसने हमें हुक़्म दिया उसके मुवाफ़िक़ आपस में मुहब्बत रखें।

24 और जो उसके हुक़्मों पर 'अमल करता है, वो इस में और ये उसमें क़ाईम रहता है; और इसी से या'नी उस पाक रूह से जो

उसने हमें दिया है, हम जानते हैं कि वो हम में काईम रहता है।

4

????? ?????????????? ?? ??????????????

1 ऐ 'अज़ीज़ो! हर एक रूह का यक्रीन न करो, बल्कि रूहों को आज़माओ कि वो खुदा की तरफ़ से हैं या नहीं; क्यूँकि बहुत से झूठे नबी दुनियाँ में निकल खड़े हुए हैं।

2 खुदा के रूह को तुम इस तरह पहचान सकते हो कि जो कोई रूह इकरार करे कि ईसा मसीह मुजस्सिम होकर आया है, वो खुदा की तरफ़ से है;

3 और जो कोई रूह ईसा का इकरार न करे, वो खुदा की तरफ़ से नहीं और यही मुखालिफ़ — ऐ — मसीह की रूह है; जिसकी खबर तुम सुन चुके हो कि वो आनेवाली है, बल्कि अब भी दुनिया में मौजूद है।

4 ऐ बच्चों! तुम खुदा से हो और उन पर ग़ालिब आ गए हो, क्यूँकि जो तुम में है वो उससे बड़ा है जो दुनिया में है।

5 वो दुनिया से है इस वास्ते दुनियाँ की सी कहते हैं, और दुनियाँ उनकी सुनती है।

6 हम खुदा से हैं। जो खुदा को जानता है, वो हमारी सुनता है; जो खुदा से नहीं, वो हमारी नहीं सुनता। इसी से हम हक़ की रूह और गुमराही की रूह को पहचान लेते हैं।

7 ऐ अज़ीज़ो! हम इस वक़्त खुदा के फ़र्ज़न्द हैं, और अभी तक ये ज़ाहिर नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं कि जब वो ज़ाहिर होगा तो हम भी उसकी तरह होंगे, क्यूँकि उसको वैसे ही देखेंगे जैसा वो है।

8 जो मुहब्बत नहीं रखता वो खुदा को नहीं जानता, क्यूँकि खुदा मुहब्बत है।

9 जो मुहब्बत खुदा को हम से है, वो इससे ज़ाहिर हुई कि खुदा ने अपने इकलौते बेटे को दुनिया में भेजा है ताकि हम उसके वसीले से ज़िन्दा रहें।

10 मुहब्बत इस में नहीं कि हम ने खुदा से मुहब्बत की, बल्कि इस में है कि उसने हम से मुहब्बत की और हमारे गुनाहों के कफ़ारे के लिए अपने बेटे को भेजा।

11 ऐ 'अज़ीज़ो! जब खुदा ने हम से ऐसी मुहब्बत की, तो हम पर भी एक दूसरे से मुहब्बत रखना फ़र्ज़ है।

12 खुदा को कभी किसी ने नहीं देखा; अगर हम एक दूसरे से मुहब्बत रखते हैं, तो खुदा हम में रहता है और उसकी मुहब्बत हमारे दिल में कामिल हो गई है।

13 चूँकि उसने अपने रूह में से हमें दिया है, इससे हम जानते हैं कि हम उसमें क्राईम रहते हैं और वो हम में।

14 और हम ने देख लिया है और गवाही देते हैं कि बाप ने बेटे को दुनिया का मुन्जी करके भेजा है।

15 जो कोई इकरार करता है कि ईसा खुदा का बेटा है, खुदा उसमें रहता है और वो खुदा में।

16 जो मुहब्बत खुदा को हम से है उसको हम जान गए और हमें उसका यकीन है। खुदा मुहब्बत है, और जो मुहब्बत में क्राईम रहता है वो खुदा में क्राईम रहता है, और खुदा उसमें क्राईम रहता है।

17 इसी वजह से मुहब्बत हम में कामिल हो गई, ताकि हमें 'अदालत के दिन दिलेरी हो; क्योंकि जैसा वो है वैसे ही दुनिया में हम भी है।

18 मुहब्बत में ख़ौफ़ नहीं होता, बल्कि कामिल मुहब्बत ख़ौफ़ को दूर कर देती है; क्योंकि ख़ौफ़ से 'अज़ाब होता है और कोई ख़ौफ़ करनेवाला मुहब्बत में कामिल नहीं हुआ।

19 हम इस लिए मुहब्बत रखते हैं कि पहले उसने हम से मुहब्बत रखी।

20 अगर कोई कहे, “मैं खुदा से मुहब्बत रखता हूँ” और वो अपने भाई से 'दुश्मनी रखे तो झूठा है: क्योंकि जो अपने भाई से जिसे उसने देखा है मुहब्बत नहीं रखता, वो खुदा से भी जिसे उसने नहीं देखा मुहब्बत नहीं रख सकता।

21 और हम को उसकी तरफ से ये हुक्म मिला है कि जो खुदा से मुहब्बत रखता है वो अपने भाई से भी मुहब्बत रखे।

5

?????? ?? ????? ??? ???????

1 जिसका ये ईमान है कि ईसा ही मसीह है, वो खुदा से पैदा हुआ है; और जो कोई बाप से मुहब्बत रखता है, वो उसकी औलाद से भी मुहब्बत रखता है।

2 जब हम खुदा से मुहब्बत रखते और उसके हुकमों पर 'अमल करते हैं, तो इससे मा'लूम हो जाता है कि खुदा के फ़र्जन्दों से भी मुहब्बत रखते हैं।

3 और खुदा की मुहब्बत ये है कि हम उसके हुकमों पर 'अमल करें, और उसके हुक्म सख्त नहीं।

4 जो कोई खुदा से पैदा हुआ है, वो दुनिया पर ग़ालिब आता है; और वो ग़ल्बा जिससे दुनिया मग़लूब हुई है, हमारा ईमान है।

5 दुनिया को हराने वाला कौन है? सिवा उस शख्स के जिसका ये ईमान है कि ईसा खुदा का बेटा है।

6 यही है वो जो पानी और खून के वसीले से आया था, या'नी ईसा मसीह: वो न फ़क़त पानी के वसीले से, बल्कि पानी और खून दोनों के वसीले से आया था।

7 और जो गवाही देता है वो रूह है, क्योंकि रूह सच्चाई है।

8 और गवाही देनेवाले तीन हैं: रूह पानी और खून; ये तीन एक बात पर मुत्तफ़िक़ हैं।

9 जब हम आदमियों की गवाही कुबूल कर लेते हैं, तो खुदा की गवाही तो उससे बढ़कर है; और खुदा की गवाही ये है कि उसने अपने बेटे के हक़ में गवाही दी है।

10 जो खुदा के बेटे पर ईमान रखता है, वो अपने आप में गवाही रखता है। जिसने खुदा का यक़ीन नहीं किया उसने उसे झूठा ठहराया, क्यूँकि वो उस गवाही पर जो खुदा ने अपने बेटे के हक़ में दी है, ईमान नहीं लाया

11 और वो गवाही ये है, कि खुदा ने हमें हमेशा की ज़िन्दगी बरख़्शी, और ये ज़िन्दगी उसके बेटे में है।

12 जिसके पास बेटा है, उसके पास ज़िन्दगी है, और जिसके पास खुदा का बेटा नहीं, उसके पास ज़िन्दगी भी नहीं।

13 मैंने तुम को जो खुदा के बेटे के नाम पर ईमान लाए हो, ये बातें इसलिए लिखी कि तुम्हें मा'लूम हो कि हमेशा की ज़िन्दगी रखते हो।।

14 और हमें जो उसके सामने दिलेरी है, उसकी वजह ये है कि अगर उसकी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ कुछ माँगते हैं, तो वो हमारी सुनता है।

15 और जब हम जानते हैं कि जो कुछ हम माँगते हैं, वो हमारी सुनता है, तो ये भी जानते हैं कि जो कुछ हम ने उससे माँगा है वो पाया है।

16 अगर कोई अपने भाई को ऐसा गुनाह करते देखे जिसका नतीजा मौत न हो तो दुआ करे खुदा उसके वसीले से ज़िन्दगी बरख़ोगा। उन्हीं को जिन्होंने ऐसा गुनाह नहीं किया जिसका नतीजा मौत हो, गुनाह ऐसा भी है जिसका नतीजा मौत है; इसके बारे में दुआ करने को मैं नहीं कहता।

17 है तो हर तरह की नारास्ती गुनाह, मगर ऐसा गुनाह भी है जिसका नतीजा मौत नहीं।

18 हम जानते है कि जो कोई खुदा से पैदा हुआ है, वो गुनाह नहीं करता; बल्कि उसकी हिफाज़त वो करता है जो खुदा से पैदा हुआ और शैतान उसे छूने नहीं पाता।

19 हम जानते हैं कि हम खुदा से हैं, और सारी दुनिया उस शैतान के कब्जे में पड़ी हुई है।

20 और ये भी जानते है कि खुदा का बेटा आ गया है, और उसने हमे समझ बरखी है ताकि उसको जो हक़ीक़ी है जानें और हम उसमें जो हक़ीक़ी है, या'नी उसके बेटे ईसा मसीह में हैं। हक़ीक़ी खुदा और हमेशा की ज़िन्दगी यही है।

21 ऐ बच्चों! अपने आपको बुतों से बचाए रखवो।

इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019
The Holy Bible in the Urdu language of India: इंडियन
रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

copyright © 2019 Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

Language: اردو (Urdu)

Contributor: Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution Share-Alike license 4.0.

You have permission to share and redistribute this Bible translation in any format and to make reasonable revisions and adaptations of this translation, provided that:

You include the above copyright and source information.

If you make any changes to the text, you must indicate that you did so in a way that makes it clear that the original licensor is not necessarily endorsing your changes.

If you redistribute this text, you must distribute your contributions under the same license as the original.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

Note that in addition to the rules above, revising and adapting God's Word involves a great responsibility to be true to God's Word. See Revelation 22:18-19.

2023-01-03

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 18 Apr 2025 from source files dated 19 Apr 2023

4a2fe4e0-ffe8-5377-87c7-19b3106ba2bc